गांधी तीर्थ, जलगांव

तकनीक और विचार से जुड़ने का अद्भुत अनुभव

हिंसा, असहिष्णुता और वैचारिक विभाजन के इस दौर में महात्मा गांधी को नए सिरे से समझने की जरूरत और गहरी हो जाती है। महाराष्ट्र के जलगांव में स्थित 'गांधी तीर्थ' इसी तलाश का उत्तर देता है। यह स्थल हमें बताता है कि गांधी को समझना केवल किताबों तक सीमित नहीं, बल्कि उनके विचारों से सीधे जुड़ने की एक जीवंत प्रक्रिया है। आधुनिक तकनीक, शोधपूर्ण प्रस्तुति और संवेदनशील क्यूरेशन के माध्यम से 'गांधी तीर्थ' महात्मा गांधी के जीवन, संघर्ष और मूल्यों को जिस तरह सजीव करता है, वह इसे एक साधारण दर्शनीय स्थल से कहीं आगे ले जाता है।

कुमार सिद्धार्थ
वरिष्ठ पत्रकार

'गांधी तीर्थ' का बड़ा आकर्षण यह है कि यह महात्मा गांधी को केवल 'महापुरुष' के रूप में नहीं, बल्कि मोहनदास करमचंद गांधी एक जिज्ञासु बालक, प्रयोगशील युवा, संघर्षरत वकील और सतत साधक के रूप में सामने रखता है। इस तीर्थ की सबसे अनोखी विशेषता इसकी ऑडियो गाइड तकनीक है। हेडफोन के माध्यम से जैसे ही हम एक-एक खंड में प्रवेश करते हैं, गांधी का जीवन, उनके विचार और उनके समय की परिस्थितियां हमारे भीतर उतरने लगती हैं। यह यात्रा पोरबंदर के एक सामान्य से घर से शुरू होकर दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह और भारत के स्वतंत्रता संग्राम तक पहुंचती है।

स्पष्टता और संदर्भ की गहराई

महात्मा गांधी के जीवन कार्यों पर आधारित विश्व का पहला आडियो गाइड संग्रहालय भ्रमण के अनुभव को विशेष बनाती है। यह साधारण जानकारी नहीं, बल्कि एक तरह का संवाद है, जो दर्शक को भीतर तक छू लेता है। आवाज, संगीत, ऐतिहासिक उद्धरण और दृश्य एक साथ मिलकर ऐसा अनुभव रचते हैं कि दर्शक केवल देख नहीं रहा होता, बल्कि उस समय को जी रहा होता है। यह तकनीक गांधी के विचारों से भावनात्मक और बौद्धिक दोनों स्तरों पर जोड़ देती है। संग्रहालय के 31 से अधिक खंड टच स्क्रीन, बाइस्कोप, डिजिटल बुक्स, थ्री-डी मैपिंग, एनिमेशन, ऐतिहासिक तस्वीरें, दुर्लभ फुटेज, गांधी के भाषणों की आवाज और समकालीन घटनाओं का दृश्यांकन आदि सब मिलकर ऐसा वातावरण रचते हैं, मानो इतिहास किताबों से निकलकर हमारे सामने खड़ा हो गया हो। चरखा, नमक सत्याग्रह, दांडी यात्रा, असहयोग आंदोलन ये सब केवल घटनाएं नहीं रह जातीं, बल्कि मानवीय संवेदना और नैतिक साहस की कहानियां बन जाती हैं। इन प्रस्तुतियों में भावुकता नहीं, बल्कि विचार की स्पष्टता और संदर्भ की गहराई दिखाई देती है।

साधन की पवित्रता और साध्य की नैतिकता

'गांधी तीर्थ' में यह बात बार-बार उभरकर आती है कि गांधी का जीवन किसी एक दिन, एक घटना या एक आंदोलन से परिभाषित नहीं होता। उनका जीवन सतत प्रयोगों की प्रयोगशाला था सत्य के प्रयोग, अहिंसा के प्रयोग, आत्मसंयम और सामाजिक न्याय के प्रयोग। दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के खिलाफ उनके संघर्ष से लेकर भारत में किसानों, मजदूरों और महिलाओं के प्रश्नों तक हर जगह गांधी का आग्रह एक ही रहा: साधन की पवित्रता और साध्य की नैतिकता। गांधी तीर्थ यह भी स्पष्ट करता है कि गांधी के लिए राजनीति सत्ता का खेल नहीं, बल्कि नैतिक जिम्मेदारी थी। सत्य, अहिंसा, आत्मसंयम और करुणा ये उनके लिए नारे नहीं, जीवन की पद्धति थे। प्रदर्शनी में यह बात उभरकर आती है कि गांधी के प्रयोग केवल स्वतंत्रता आंदोलन तक सीमित नहीं थे, बल्कि शिक्षा, समाज, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण तक फैले हुए थे। यहां यह भी प्रभावी ढंग से दिखाया गया है कि गांधी केवल राजनीतिक नेता नहीं थे, बल्कि समाज सुधारक, शिक्षाविद्। और पर्यावरण के प्रति संवेदनशील चिंतक भी थे। बुनियादी शिक्षा, स्वदेशी, ग्राम स्वराज और श्रम की गरिमा इन विचारों को आज की चुनौतियों से जोड़कर प्रस्तुत किया गया है।

जीवन जीने की पद्धति सत्य और अहिंसा

डिजिटल माध्यमों से यह सवाल भी उठाया जाता है कि उपभोक्तावाद, हिंसा और असमानता से भरी आज की दुनिया में गांधी की प्रासंगिकता कहां और कैसे है। इन सवालों के सीधे उत्तर नहीं दिए जाते, बल्कि दर्शक को सोचने के लिए प्रेरित किया जाता है और शायद यही गांधी की सबसे बड़ी शिक्षा है। 'गांधी तीर्थ' का एक सशक्त पक्ष यह भी है कि यहां महात्मा गांधी के साथ उनके समय के अन्य व्यक्तित्वों और आंदोलनों का संदर्भ भी मिलता है। गोखले, टॉलस्टॉय, टैगोर, नेहरू इन सबके साथ गांधी का संवाद और मतभेद ईमानदारी से प्रस्तुत किए गए हैं। इससे गांधी किसी देवतुल्य, आलोचना से परे छवि में नहीं, बल्कि एक विचारशील और आत्मालोचन करने वाले मनुष्य के रूप में उभरते हैं। भ्रमण के दौरान सबसे गहरा प्रभाव गांधी के नैतिक साहस ने छोड़ा। सत्ता, लोकप्रियता या तात्कालिक लाभ के आगे झुकने से इंकार करने का साहस आज के समय में दुर्लभ होता जा रहा है। 'गांधी तीर्थ' यह याद दिलाता है कि परिवर्तन की शुरुआत बाहर से नहीं, भीतर से होती है। सत्य और अहिंसा केवल राजनीतिक रणनीति नहीं, बल्कि जीवन जीने की पद्धति है।

विस्तृत और शांत परिसर

'गांधी तीर्थ' लगभग 40 एकड़ में फैला हुआ एक विस्तृत और शांत परिसर है। हरियाली, खुले स्थान और सादगी से भरा यह वातावरण स्वयं गांधी के जीवन-दर्शन की याद दिलाता है। यह परिसर बीते करीब दो दशकों से सक्रिय है और गांधीवादी विचारों के अध्ययन, शोध और प्रसार का एक महत्वपूर्ण केंद्र बन चुका है। पद्मश्री डॉ. भंवरलाल जैन के अथक परिश्रम और उनके अद्भुत कल्पना का साकार रूप लेता गांधी रिसर्च फाउंडेशन न केवल गांधी के जीवन और कर्म पर कार्य कर रहा है, बल्कि गांधी के विचारों को समकालीन संदर्भों से जोड़ने का भी सतत प्रयास कर रहा है, जहां गांधी के विविध रचनात्मक कार्यों को धरातल पर उतरते आप देख सकते है। यह भी उल्लेखनीय है कि गांधी तीर्थ केवल अतीत की ओर देखने वाला स्थल नहीं है। यहां शोध, अध्ययन और संवाद के लिए व्यापक संसाधन उपलब्ध हैं। यह स्थान युवाओं, शोधकर्ताओं और शिक्षकों के लिए प्रेरणा का केंद्र बन सकता है। यहां से निकलते समय मन में यह भाव बना रहता है कि गांधी को 'पढ़' लेने से अधिक जरूरी है, उन्हें 'जीना' अपने छोटे-छोटे निर्णयों, व्यवहार और सामाजिक जिम्मेदारियों में। आज जब समाज हिंसा, नफरत, संप्रदायिकता, असहिष्णुता और पर्यावरणीय संकटों से जूझ रहा है, तब गांधी तीर्थ हमें यह याद दिलाता है कि समाधान कहीं बाहर नहीं, बल्कि हमारे भीतर मौजूद नैतिक विवेक में छिपा है। यही इस तीर्थ की सबसे बड़ी उपलब्धि और सबसे गहरी सीख है। यहां आकर यह सवाल बार-बार मन में उठता है कि क्या इन समस्याओं का समाधान केवल कानून और शक्ति में है या फिर नैतिक विवेक और संवाद में? गांधी तीर्थ यह रास्ता जरूर दिखाता है कि अहिंसा, सह-अस्तित्व और सत्य के मार्ग पर चलकर विकल्प खोजे जा सकते हैं। इस अर्थ में गांधी तीर्थ केवल अतीत का संग्रहालय नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए एक वैचारिक प्रयोगशाला है। यदि आज की दुनिया में बढ़ती हिंसा और संप्रदायिकता का कोई टिकाऊ समाधान तलाशना हो, तो गांधी तीर्थ की यात्रा आवश्यक लगती है। यहां से लौटते समय यह एहसास गहरा हो जाता है कि गांधी कोई इतिहास का अध्याय नहीं, बल्कि हमारे समय की जरूरत हैं और उन्हें समझने की शुरुआत यहीं से हो सकती है।

सक्सेस स्टोरी

नोएडा से वैनगार्ड तक: एआई नवाचार और आत्मनिर्भरता की प्रेरणादायक यात्रा

आयुष श्रीवास्तव की कहानी दर्शाती है कि अगर आपके पास समर्पण, योजना और परिश्रम है, तो आप कहीं से भी शुरू होकर किसी भी ऊंचाई को छू सकते हैं। उनका अनुभव न केवल तकनीकी अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, बल्कि हर उस युवा या पेशेवर को प्रेरणा देगा, जो खुद को बदलना चाहता है।

भारत से अमेरिका तक: संघर्ष और संकल्प की कहानी- आयुष ने अपने करियर की शुरुआत एनटीटी डाटा सर्विसेज (पूर्व में डेल इंटरनेशनल सर्विसेज) में नोएडा से की थी। वहां उन्होंने डेटा माइनिंग, ETL प्रोसेस और सांख्यिकीय विश्लेषण के ज़रिए टेलीकॉम क्षेत्र में लागत में उल्लेखनीय बचत की। परंतु उनका सपना था एक वैश्विक स्तर पर एआई और डेटा विज्ञान में अग्रणी बनना और इसके लिए उन्होंने उठाया पहला कदमः GMAT (ग्रेजुएट मैनेजमेंट एडमिशन टेस्ट) की तैयारी।

GMAT सफलता और विश्वस्तरीय शिक्षा- आयुष ने GMAT की कठोर तैयारी स्वयं की, बिना किसी कोचिंग के। इसके बलबूते उन्होंने प्रवेश पायाः साउदर्न मेथोडिस्ट यूनिवर्सिटी (SMU), कॉक्स स्कूल ऑफ बिजनेस (QS वर्ल्ड रैंकिंग में टॉप 100 में शामिल बिजनेस एनालिटिक्स प्रोग्राम) यहां से उन्होंने बिजनेस एनालिटिक्स में मास्टर्स किया और अमेरिका में AI व मशीन लर्निंग के क्षेत्र में एक सशक्त आधार तैयार किया।

एंटरप्राइज AI में उत्कृष्टता- वैनगार्ड में भूमिका वर्तमान में आयुष वैनगार्ड ग्रुप में मशीन लर्निंग इंजीनियर (स्पेशलिस्ट) के रूप में कार्यरत हैं, जहां वे जेनरेटिव एआई (GenAI) मॉडल्स को डिजाइन और तैनात करते हैं। उनके द्वारा बनाए गए समाधानों का उपयोग Vanguard की 70 से ज्यादा टीमें कर रही हैं।

आयुष की विशेषज्ञता

- Retrieval-Augmented Generation (RAG) और Prompt Engineering
- Large Language Models (LLMs) का फाइन-ट्यूनिंग
- AWS Neptune और NetworkX के माध्यम से ग्राफ डेटाबेस डिज़ाइन
- AWS SageMaker, Lambda, PySpark, Glue, Docker, Kubernetes का उपयोग
- Ernst & Young में बहु-उद्योगीय AI समाधान
- वैनगार्ड से पहले आयुष ने Ernst & Young में मैनेजर – डेटा एवं
- एनालिटिक्स के रूप में कार्य किया। उन्होंने Fortune 500 कंपनियों के लिए AI समाधान विकसित किए।
- Citibank, Goldman Sachs, DTCC जैसी कंपनियों के लिए अनुपालन और ऑटोमेशन समाधान
- कोविड काल में रिटर्न-टू-ऑफिस AI मॉडल विकसित किया
- क्लाउड-आधारित डेटा मार्केटप्लेस और डेटा फैब्रिक प्लेटफ़ॉर्म डिजाइन किए।

आखिर क्यों विशेष है आयुष की कहानी

आयुष ने साधारण पृष्ठभूमि से असाधारण ऊंचाई तक का सफर तय किया। GMAT जैसी कठिन परीक्षा स्वयं की तैयारी से उत्तीर्ण की। इसके साथ ही भारत से अमेरिका तक पुनः खुद को तकनीकी रूप से खड़ा किया। आज वे AI/ML के क्षेत्र में एक मार्गदर्शक और प्रेरणा स्त्रोत हैं।

जॉब का पहला दिन

सेवा, संकल्प और संतोष

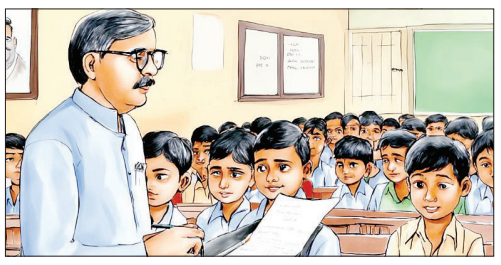

बेसिक शिक्षा विभाग में मेरी सेवा का शुभारंभ 17 दिसंबर 2009 को हुआ। मेरी पहली नियुक्ति जनपद संभल में हुई थी। पवासा ब्लॉक के अंतर्गत मेरा विद्यालय मुख्य मार्ग से लगभग सात किलोमीटर भीतर स्थित एक ग्रामीण क्षेत्र में था। नियुक्ति के पहले दिन जब मैं विद्यालय की ओर जा रहा था, तो मन में एक अजीब-सी बेचैनी और असमंजस था। यह सोचकर अनेक प्रश्न मन में उठ रहे थे कि इतने दूर-दराज क्षेत्र में कार्य कैसे होगा, यहां नौकरी कैसे निभा पाऊंगा। आशंकाएं स्वाभाविक थीं। लेकिन जैसे ही मैं विद्यालय पहुंचा, मेरे भीतर एक नया आत्मविश्वास जाग उठा। दरअसल, अध्यापक बनना मेरा बचपन का सपना रहा है। मेरी माताजी स्वयं अध्यापन कार्य से जुड़ी रही हैं। उन्हें बच्चों को पढ़ाते हुए देखकर मेरे मन में भी यह लालसा जन्म लेती रही कि मैं भी एक दिन शिक्षक बनूं और बच्चों के जीवन में शिक्षा का प्रकाश फैलाऊं। शिक्षण मेरे लिए कभी केवल एक नौकरी नहीं रहा, बल्कि यह मेरा जुनून है। बच्चों को पढ़ाना, उनके भविष्य को संवारना और उनके जीवन को दिशा देना-यही मेरे जीवन का उद्देश्य रहा है। वर्ष 2009 से 2016 तक मैं संभल जनपद में कार्यरत रहा। इसके पश्चात 2016 में मेरा स्थानांतरण बरेली हुआ, जहां आंवला स्थित प्राथमिक विद्यालय देवी में मैंने प्रधानाध्यापक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। उस विद्यालय से मेरा गहरा भावनात्मक जुड़ाव हो गया। मैंने विद्यालय के सर्वांगीण विकास के लिए पूरे मनोयोग से कार्य किया। विद्यालय के भौतिक कायाकल्प से लेकर शैक्षिक वातावरण के सुदृढ़ीकरण तक अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए। अपने इन प्रयासों से मुझे गहरा आत्मसंतोष प्राप्त हुआ।

विकल्प सक्सेना
बरेली

जुलाई 2025 में पदोन्नति के उपरांत मैं जूनियर विद्यालय सिउलिया में कार्यरत हुआ। यहां मैं कक्षा छह से आठ तक के विद्यार्थियों को शिक्षण कार्य करता हूं। अपने कार्य से मुझे आज भी उतना ही लगाव और प्रेम है। विद्यार्थियों के साथ समय बिताना, उनकी जिज्ञासाओं को समझना और उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करना मुझे आंतरिक आनंद प्रदान करता है। विद्यालय का समस्त स्टाफ अत्यंत सहयोगी, सकारात्मक और समर्पित भावना से कार्य करने वाला है।

मैं बेसिक शिक्षा विभाग में अध्यापक के रूप में कार्य करने को केवल आजीविका का साधन नहीं, बल्कि समाज सेवा का सर्वोत्तम माध्यम मानता हूं। हम ऐसे बच्चों को शिक्षा प्रदान करते हैं जो साधन-संपन्न नहीं हैं, जिन्हें निजी विद्यालयों में पढ़ने की सुविधा उपलब्ध नहीं है और जिनकी ओर प्रायः समाज का ध्यान नहीं जाता। यह कार्य न केवल हमारे जीवन-यापन का माध्यम है, बल्कि उन बच्चों के जीवन-कल्याण का मार्ग भी प्रशस्त करता है। हम उनके भीतर छिपी प्रतिभाओं को पल्लवित करते हैं और उन्हें आगे बढ़ने का अवसर प्रदान करते हैं। बेसिक शिक्षा विभाग के अध्यापक जहां एक ओर अपना जीवन-यापन करते हैं, वहीं दूसरी ओर बच्चों को शिक्षित कर पुण्य का अर्जन भी करते हैं। इसलिए इस सेवा को केवल रोजगार नहीं, बल्कि समाज सेवा और राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्य के रूप में देखना चाहिए। जब शिक्षा इस भावना के साथ प्रदान की जाती है, तो निश्चय ही उससे अधिक गुणवत्तापूर्ण, संवेदनशील और प्रभावशाली शिक्षा का सृजन होता है।

हिंदी के वैश्वीकरण में डिजिटल संसाधनों का योगदान

विश्व हिंदी दिवस

भाषा किसी भी समाज की आत्मा होती है। वह केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि संस्कृति, परंपरा, विचारधारा और सामूहिक चेतना की संवाहक होती है। हिंदी भाषा भारतीय समाज की ऐसी ही जीवंत अभिव्यक्ति है, जिसने सदियों से जनसाधारण की भावनाओं, संघर्षों और आकांक्षाओं को स्वर दिया है। समय के साथ समाज, जीवन-शैली और संचार के साधनों में व्यापक परिवर्तन आए हैं। आज हम डिजिटल युग में जी रहे हैं-एक ऐसा युग जहां तकनीक ने दूरी, समय और सीमाओं को लगभग समाप्त कर दिया है। इस डिजिटल परिवर्तन ने हिंदी भाषा के स्वरूप और प्रयोग को भी गहराई से प्रभावित किया है।

प्रो. मीना यादव
बरेली

पूर्व में हिंदी का प्रचार पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, सभाओं और मंचों तक सीमित था, किंतु आज वही हिंदी मोबाइल, कंप्यूटर, सोशल मीडिया और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से विश्व के कोने-कोने तक पहुंच रही है। डिजिटल उपकरणों ने हिंदी को नई पहचान दी है और उसे आधुनिक संदर्भों में अधिक उपयोगी व प्रासंगिक बनाया है।

डिजिटल उपकरण वे तकनीकी साधन हैं, जिनका उपयोग सूचना के निर्माण, संग्रह, प्रसंस्करण और प्रसार के लिए किया जाता है। कंप्यूटर, स्मार्टफोन, टैबलेट, इंटरनेट, सॉफ्टवेयर, मोबाइल ऐप्स और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म इसके प्रमुख उदाहरण हैं। भाषा के संदर्भ में इन उपकरणों का महत्व इसलिए बढ़ जाता है, क्योंकि इनके माध्यम से भाषा को लिखा, पढ़ा, सुना और देखा जा सकता है। आज डिजिटल उपकरणों का उपयोग केवल तकनीकी विशेषज्ञों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि सामान्य व्यक्ति भी मोबाइल और इंटरनेट के माध्यम से इनका सहज उपयोग कर रहा है।

हिंदी के क्षेत्र में डिजिटल उपकरणों का प्रयोग कई स्तरों पर हो रहा है। पहला स्तर लेखन और अभिव्यक्ति का है। आज लेख, कविता, कहानी, ब्लॉग और शोध-लेख डिजिटल माध्यमों से लिखे जा रहे हैं। डिजिटल टाइपिंग ने हस्तलेखन की कठिनाइयों को कम कर दिया है। दूसरा स्तर प्रकाशन और प्रसार का है। अब लेखक को अपनी रचना प्रकाशित कराने के लिए पत्र-पत्रिकाओं पर निर्भर नहीं रहना पड़ता, ब्लॉग, वेबसाइट और सोशल मीडिया के माध्यम से रचनाएं तुरंत पाठकों तक पहुंच जाती हैं।

तीसरा स्तर श्रव्य-दृश्य माध्यम का है। यूट्यूब, पॉडकास्ट और ऑडियो बुक्स ने हिंदी को सुनने और देखने की भाषा बना दिया है, जिससे निरक्षर और अर्ध-साक्षर वर्ग भी हिंदी सामग्री से जुड़ पा रहा है। चौथा स्तर शिक्षा और प्रशिक्षण का है। ऑनलाइन कक्षाओं, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म और डिजिटल पाठ्य सामग्री ने हिंदी शिक्षण को अधिक सुलभ और प्रभावी बनाया है। हिंदी में उपलब्ध प्रमुख डिजिटल उपकरण-हिंदी के डिजिटल विकास में यूनिकोड तकनीक का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। यूनिकोड ने हिंदी को वैश्विक डिजिटल मानक प्रदान किया, जिससे वह किसी विशेष फॉन्ट तक सीमित नहीं रही। इनस्क्रिप्ट कीबोर्ड, गूगल हिंदी इनपुट टूल और माइक्रोसॉफ्ट इंडिक टूल्स ने हिंदी टाइपिंग को सरल बना दिया है। अब रोमन लिपि में लिखकर भी हिंदी में परिवर्तित करना संभव है, जिससे हिंदी लेखन का दायरा व्यापक हुआ है।

मोबाइल ऐप्स और हिंदी

स्मार्टफोन के व्यापक प्रसार ने हिंदी भाषा को जन-जन तक पहुंचाया है। आज समाचार, साहित्य, शिक्षा और मनोरंजन हर क्षेत्र के लिए हिंदी ऐप्स उपलब्ध हैं। हिंदी शब्दकोश ऐप्स ने भाषा को समझने में सहायता दी है। ई-बुक और ऑडियो बुक ऐप्स ने पढ़ने की आदत को डिजिटल रूप दिया है। हिंदी सीखने वाले ऐप्स ने गैर-हिंदी भाषियों को भी हिंदी से जोड़ा है।

डिजिटल प्रकाशन और हिंदी साहित्य

डिजिटल प्रकाशन माध्यमों ने हिंदी साहित्य को नई ऊर्जा दी है। ब्लॉग और ई-पत्रिकाओं के माध्यम से नए लेखक सामने आए हैं। अब साहित्य केवल स्थापित लेखकों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि सामान्य व्यक्ति भी अपनी रचनात्मकता को अभिव्यक्त कर सकता है। ई-बुक्स ने पुस्तकों को सस्ता, सुलभ और व्यापक बनाया है। इससे पाठक संख्या में वृद्धि हुई है और साहित्य का लोकतंत्रीकरण हुआ है। डिजिटल उपकरणों ने हिंदी के प्रचार-प्रसार को अभूतपूर्व गति दी है। इंटरनेट के माध्यम से हिंदी सामग्री कुछ ही क्षणों में विश्वभर में पहुंच जाती है। इससे प्रवासी भारतीयों और विदेशों में हिंदी सीखने वालों को भी अपनी भाषा से जुड़ने का अवसर मिला है। डिजिटल माध्यमों ने नई पीढ़ी को हिंदी से जोड़ा है। युवा वर्ग अब हिंदी में वीडियो बनाता है, ब्लॉग लिखता है और ऑनलाइन कक्षाएं संचालित करता है। इससे हिंदी की छवि आधुनिक और उपयोगी भाषा के रूप में उभरी है।